



- पोषक प्रतिधारण: आर्द्रभूमि वनस्पतियाँ आस-पास की मृदा और जल में पाये जाने वाले पोषक पदार्थों का तीव्रता से अंतर्ग्रहण और संग्रहण करती हैं।
- जल शुद्धिकरण: अनेक आर्द्रभूमि तंत्रों में बायोफिल्टर, जलीय पादप और जीवधारी पाए जाते हैं, जिनमें पोषण अंतर्ग्रहण के अतिरिक्त विषैले पदार्थों को हटाने की क्षमता पायी जाती है। जो कीटनाशकों, औद्योगिक निस्सरण और खनन गतिविधियों से आर्द्रभूमियों में मिल जाते हैं।
- जैवविविधता का भंडार
- आर्द्रभूमि उत्पाद: मत्स्य उत्पादों के अतिरिक्त, आर्द्रभूमि तंत्र वनस्पतियों और अन्य पारिस्थिकीय उत्पादों की शृंखला का प्राकृतिक रूप से उत्पादन करती है जिनका व्यक्तिगत और वाणिज्यिक उपयोग हेतु दोहन किया जा सकता है। कुछ महत्वपूर्ण उत्पाद: चावल, साबूदाना, नीपा पाम, मैंग्रोव से शहद, ईंधन की लकड़ी, नमक (समुद्री जल के वाष्पीकरण से उत्पादित), पशु चारा, पारंपरिक औषधियाँ (जैसे मैंग्रोव छाल से औषधि निर्माण), वस्त्रों के लिए फाइबर, रंजक और टैनिन के लिए फाइबर हैं।
 - सांस्कृतिक मूल्य
 - मनोरंजन और पर्यटन
- जलवायु परिवर्तन शमन और अनुकूलन: आर्द्रभूमियाँ जलवायु परिवर्तन के सम्बंध में दो मुख्य कार्यों का निष्पादन करती हैं। उनके पास कार्बन सिंक करने की क्षमता के द्वारा शमन प्रभावशीलता और जल को संग्रहित एवं नियमित करने की क्षमता के द्वारा अनुकूलन प्रभावशीलता होती है। हालांकि, तटीय आर्द्रभूमियाँ जैसे उष्णकटिबंध मैंग्रोव और शीतोष्ण लवणीय कच्छ नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O) के उत्सर्जक भी होते हैं। दक्षिणी-पूर्वी एशिया में पीट दलदल वन और मृदा, कार्बन डाई ऑक्साइड (CO_2) के प्रमुख स्रोत हैं। चावल के खेत मीथेन के स्रोत होते हैं।

6.2. भारत में आर्द्रभूमि ह्रास के कारण

मानवीय कारण:

- कृषि जल निकास प्रणाली, वानिकी और मच्छर नियंत्रण
- नौवहन और खाद्य संरक्षण के लिए तलकपर्षण (Dredging) और धारा की दिशा निर्धारण (channelization)
- ठोस अपशिष्ट निपटान और सड़क निर्माण के लिए भराव
- मत्स्यपालन और समुद्री कृषि के लिए संरक्षण उपाय
- बाढ़ नियंत्रण के लिए तटबंधो, बाँधों और समुद्री दीवारों का निर्माण करना
- घरेलू सीवेज से कीटनाशकों, शाकनाशकों और पोषकों का निस्सरण
- पीट, कोयला, फास्फेट और अन्य खनिजों के लिए आर्द्रभूमियों का खनन
- भूजल का दोहन
- बाँधों और गहरे जल प्रवाह मार्गों के द्वारा अवसादों का विपथन
- नहरों, सड़कों और अन्य संरचनाओं के माध्यम से जलविज्ञान सम्बन्धी परिवर्तन
- भूजल क्षेत्र से तेल, गैस और अन्य खनिजों के दोहन से अवतलन

प्राकृतिक कारण:

- अवतलन
- समुद्री जल स्तर में वृद्धि
- सूखा
- हरिकेन और अन्य तूफान
- अपरदन
- जैविक प्रभाव

(कृपया अधिक जानकारी के लिए आर्द्रभूमि संबंधी नोट्स देखिए, जहाँ विषय पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है।)